ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 298-302**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन और शंघाई सहयोग संगठन की उभरती भूमिका

अमृता श्रीवास्तवा,
2. डॉ0 राजकुमार सिंह

शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर, शोध केंद्र– राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय आगरा कैंट, (डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्विद्यालय ,आगरा) आगरा (उ0प्र0) भारत

Received-30.08.2026, Revised-08.09.2026, Accepted-15.09.2026, **E-mail:amrita.srivastava86@gmail.com**

सारांशः ***विश्व की शक्ति संरचना में गहरे परिवर्तन हो रहे हैं। शीत युद्ध के बाद से जो एकध्रुवीय व्यवस्था कायम थी, वह धीरे–धीरे कमजोर पड़ रही है। इसके स्थान पर बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय हो रहा है। आर्थिक शक्ति पश्चिम से एशिया की ओर स्थानांतरित हो रही है। चीन और भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाएँ वैश्विक मंच पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। रूस अपनी रणनीतिक स्थिति को मजबूत कर रहा है। इन सभी परिवर्तनों के बीच शंघाई सहयोग संगठन एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में उभर रहा है। शंघाई सहयोग संगठन की स्थापना सुरक्षा सहयोग और आतंकवाद–विरोधी प्रयासों को ध्यान में रखते हुए की गई थी। किंतु समय के साथ यह संगठन आर्थिक, ऊर्जा और राजनीतिक सहयोग का भी मंच बन गया है। यूरेशिया के तेजी से बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य में शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका लगातार बढ़ रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य वैश्विक शक्ति संतुलन में हो रहे परिवर्तनों और इन परिवर्तनों के संदर्भ में शंघाई सहयोग संगठन की उभरती भूमिका का विश्लेषण करना है। गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से यह शोध उपलब्ध साहित्य पर आधारित है। प्रमुख निष्कर्ष यह हैं कि शंघाई सहयोग संगठन केवल एक क्षेत्रीय सुरक्षा संगठन नहीं है, बल्कि यह बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण संस्थागत प्रतिनिधित्व करता है। वैश्विक शक्ति संतुलन के बदलाव के साथ–साथ शंघाई सहयोग संगठन की भूमिका विश्व राजनीति में और भी केंद्रीय होती जा रही है। भारत, चीन और रूस जैसी प्रमुख शक्तियों की इस मंच पर उपस्थिति इसे वैश्विक महत्व प्रदान करती है।***

कुंजीभूत शब्द– वैश्विक शक्ति संतुलन, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, शंघाई सहयोग संगठन, भू–राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, लोकलुभावन।

1. प्रस्तावना– वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन की पृष्ठभूमि– शीत युद्ध की समाप्ति के बाद से विश्व की राजनीतिक व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा गया है। सोवियत संघ के विघटन के साथ–साथ वह द्विध्रुवीय व्यवस्था समाप्त हो गई जो लगभग पचास साल तक विश्व राजनीति को नियंत्रित करती रही थी। उस समय अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा और विश्व पर उसका अकेला प्रभुत्व स्थापित हुआ। (तासोपोलोस, 2026) किंतु यह एकध्रुवीय व्यवस्था अधिक समय तक टिकी नहीं रह सकी। पिछले दो दशकों में चीन और भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं की तेजी से वृद्धि हुई है। चीन विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और भारत पाँचवें स्थान पर पहुँच गया है। ये परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं हैं, बल्कि सैन्य, तकनीकी और राजनीतिक क्षेत्रों में भी गहरे बदलाव ला रहे हैं। (उनलदीलर कोचमाज़, 2019) एशिया का भू–राजनीतिक महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। विश्व की जनसंख्या का अधिकांश भाग एशिया में रहता है और यहाँ की आर्थिक गतिविधि विश्व के कुल आर्थिक उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा प्रतिनिधित्व करती है।

शक्ति के इस पुनर्वितरण से पश्चिमी देशों का प्रभुत्व कमजोर पड़ रहा है। अमेरिका के भीतर आर्थिक असमानता बढ़ रही है, राजनीतिक ध्रुवीकरण गहरा हो रहा है और लोकलुभावनवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यूरोप भी आंतरिक विभाजन से जूझ रहा है। इसके विपरीत, रूस अपनी सैन्य क्षमता को मजबूत कर रहा है और क्षेत्रीय मामलों में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा है। (लीन, 2025) वैश्विक दक्षिण के देश भी अब अंतरराष्ट्रीय निर्णय प्रक्रिया में अधिक सक्रिय हो गए हैं।

बहुध्रुवीयता और बदलती अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था– बहुध्रुवीयता का तात्पर्य है कि विश्व की शक्ति एकाधिक केंद्रों में विभाजित है। पहले जहाँ एक या दो महाशक्तियों का प्रभुत्व था, वहीं अब कई शक्ति केंद्र एक साथ मौजूद हैं। (लीन, 2025) ये केंद्र राष्ट्र–राज्य, क्षेत्रीय संगठन, बहुराष्ट्रीय निगम या यहाँ तक कि गैर–राज्य कार्यकर्ता भी हो सकते हैं। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में कोई एक शक्ति अकेले निर्णय नहीं ले सकती। किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर सहमति बनाने के लिए कई शक्तियों को एक–दूसरे से समझौता करना पड़ता है। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) पश्चिम–केंद्रित अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ अब उतने प्रभावी नहीं रह गई हैं जितनी पहले थीं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं में भी परिवर्तन की माँग उठने लगी है। उभरती शक्तियाँ इन संस्थाओं में अपने प्रतिनिधित्व को लेकर सवाल उठा रही हैं। इसी कारण नए मंच और संगठन बनने लगे हैं। ब्रिक्स जैसे गठजोड़ और शंघाई सहयोग संगठन जैसे क्षेत्रीय संगठन महत्वपूर्ण हो गए हैं। (संयुक्त राष्ट्र महासभा, 2023) ये नई संस्थाएँ एक वैकल्पिक विश्व व्यवस्था के निर्माण का प्रयास कर रही हैं।

शंघाई सहयोग संगठन का उदय और प्रासंगिकता– शंघाई सहयोग संगठन की स्थापना 1996 में हुई थी जब चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान ने शंघाई में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। (लुकिन, 2021) शुरुआत में इसका उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा सहयोग और आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त प्रयास करना था। लेकिन समय के साथ शंघाई सहयोग संगठन का दायरा बढ़ता गया। 2001 में इसका नाम और दायरा दोनों विस्तृत किए गए। 2017 में भारत और पाकिस्तान को पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल किया गया, जिससे संगठन की महत्ता में वृद्धि हुई। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024)

शंघाई सहयोग संगठन की संरचना कई स्तरों पर काम करती है। इसमें राज्य के प्रमुखों की परिषद्, सरकार के प्रमुखों की परिषद्, विदेश मंत्रियों की परिषद् और स्थायी सचिवालय होती है। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024) संगठन का सदस्य राष्ट्र होने के लिए सर्वसम्मति की आवश्यकता होती है। यह संगठन सुरक्षा सहयोग से लेकर आर्थिक, सांस्कृतिक और ऊर्जा सहयोग तक कई क्षेत्रों में काम करता है। (उनलदीलर कोचमाज़, 2019)

चीन, रूस और भारत की भूमिका शंघाई सहयोग संगठन को विशेष महत्व देती है। चीन इसे अपनी "एक पेटी एक सड़क" पहल का विस्तार करने का माध्यम बनाता है। रूस इसे अपनी रणनीतिक स्थिति को मजबूत करने का साधन मानता है। भारत इसे एशिया में अपनी सुरक्षा और आर्थिक हित के लिए महत्वपूर्ण मानता है। (तासोपोलोस, 2026) शंघाई सहयोग संगठन बदलती वैश्विक शक्ति संरचना का प्रतिबिंब है। यह संगठन उस नई विश्व व्यवस्था का प्रतीक है जिसमें एकध्रुवीयता की जगह बहुध्रुवीयता ले रही है।

2. शोध के उद्देश्य–

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

1. वैश्विक शक्ति संतुलन में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण करना और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के उदय को समझना।
2. बदलते वैश्विक संदर्भ में शंघाई सहयोग संगठन की उभरती भूमिका और इसकी संभावनाओं का अध्ययन करना।

3. शोध पद्धति– यह शोध मुख्यतः गुणात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए वैश्विक शक्ति संतुलन और शंघाई सहयोग संगठन से संबंधित विषयों पर अकादमिक साहित्य की समीक्षा की गई है। शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। विभिन्न शोध पत्रों, पुस्तकों, पत्रिकाओं और संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्टों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषणात्मक ढंग से प्रयोग किया गया है। शोध की केंद्रीय अवधारणाएँ हैं– वैश्विक शक्ति संतुलन, बहुध्रुवीयता, भू–राजनीति और क्षेत्रीय संस्थागत सहयोग। इन अवधारणाओं के माध्यम से चीन, रूस, भारत और अन्य देशों की भूमिका का संदर्भानुकूल विश्लेषण किया गया है। शोध में तुलनात्मक और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है। शंघाई सहयोग संगठन के विकास को ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में देखा गया है और इसके भविष्य की संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है। शोध की एक महत्वपूर्ण सीमा यह है कि यह पूर्णतः उपलब्ध साहित्य तक सीमित है। इसमें प्राथमिक डेटा या प्राथमिक साक्षात्कार शामिल नहीं हैं। शोध का मुख्य ध्यान शंघाई सहयोग संगठन के संस्थागत विकास और इसकी भू–राजनीतिक भूमिका पर है।

4. मुख्य विश्लेषणात्मक चर्चा– वैश्विक शक्ति संतुलन का बदलता स्वरूपः शीत युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था को समझने के लिए हमें पहले यह जानना आवश्यक है कि उस समय विश्व में किस प्रकार की शक्ति संरचना थी। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति बन गया। अगले दो दशकों तक अमेरिका की सैन्य व्यय, आर्थिक उत्पादन और सांस्कृतिक प्रभाव किसी अन्य देश की तुलना में कहीं अधिक थे। किंतु यह एकध्रुवीयता स्थायी नहीं रही। 2008 का वैश्विक आर्थिक संकट एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस संकट में अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था को भारी नुकसान हुआ। विश्व की आर्थिक शक्ति में पुनर्वितरण का यह एक स्पष्ट संकेत था। इसी समय चीन की आर्थिक वृद्धि अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रही थी। (युक, 2024) चीन की रणनीतिक साझेदारी ने अमेरिकी प्रभुत्व को चुनौती देने का एक माध्यम बन गई।

भारत ने भी विश्व अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को मजबूत किया। (पटनायक, 2019) भारत की सूचना प्रौद्योगिकी क्षमता और बढ़ती आर्थिक वृद्धि ने इसे एक महत्वपूर्ण अभिनेता बना दिया। रूस ने अपनी सैन्य क्षमता में वृद्धि की और क्षेत्रीय मामलों में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। अमेरिकी प्रभुत्व में कमी आ गई और एक बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय हुआ। शक्ति के इस पुनर्वितरण में कई देश शामिल हैं। ब्राजील, इंडोनेशिया, दक्षिण अफ्रीका जैसे देश भी अपनी आर्थिक और राजनीतिक शक्ति बढ़ा रहे हैं। (ओइडोव और बतमुंख, 2025)

यह केवल आर्थिक परिवर्तन नहीं है। सैन्य शक्ति भी नए तरीकों से विभाजित हो रही है। अमेरिका के पास अभी भी विश्व की सबसे शक्तिशाली सेना है, लेकिन चीन और रूस अपनी सैन्य क्षमता को आधुनिकीकृत कर रहे हैं। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर युद्ध और अंतरिक्ष में सैन्य उपकरण जैसी नई तकनीकों के क्षेत्र में भी नई शक्तियाँ आगे बढ़ रही हैं। आर्थिक एवं रणनीतिक शक्ति का यह पुनर्वितरण एक बहुध्रुवीय विश्व की ओर बढ़ने का संकेत है।

बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था और नए शक्ति केंद्र– बहुध्रुवीयता की अवधारणा पारंपरिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है। जहाँ पहले शक्ति एक या दो केंद्रों में सीमित थी, वहीं अब यह कई केंद्रों में बिखरी हुई है। एशिया में उभरती अर्थव्यवस्थाएँ नए शक्ति केंद्र बन गई हैं। लैटिन अमेरिका और अफ्रीका भी इस प्रक्रिया में शामिल हैं। (लीन, 2025) विश्व की आर्थिक शक्ति का एक बड़ा हिस्सा अब विकसित देशों के बाहर है। बहुपक्षीय संस्थाओं का रूप भी बदल गया है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाएँ अब उतनी प्रभावी नहीं रह गई हैं। इसके बजाय नई संस्थाएँ बनी हैं। ब्रिक्स एक ऐसा संगठन है जो विकसित देशों की वर्तमान व्यवस्था को चुनौती दे रहा है। शंघाई सहयोग संगठन एशिया में एक क्षेत्रीय शक्ति केंद्र के रूप में उभरा है। (अल्लिसन, 2019) ये नई संस्थाएँ अधिक समावेशी और संतुलित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती हैं।

वैश्विक दक्षिण के देशों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गई है। अफ्रीकी देश, एशियाई देश और लैटिन अमेरिकी देश अब आर्थिक और राजनीतिक मामलों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इन देशों के पास प्राकृतिक संसाधन हैं, युवा जनसंख्या है और बाजार की विशाल संभावना है। (स्टेयर्स एट अल., 2020) बहुध्रुवीय विश्व में ये देश महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें आपस में सहयोग और समन्वय बढ़ाना होगा।

शंघाई सहयोग संगठन का विकास और विस्तार– शंघाई सहयोग संगठन की यात्रा 1996 में एक अनौपचारिक समझौते से शुरू हुई थी। इसे "शंघाई पाँच" कहा जाता था क्योंकि इसमें पाँच सदस्य देश थेकृचीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान और ताजिकिस्तान। इन देशों का मुख्य उद्देश्य अपनी सीमाओं पर सुरक्षा सहयोग करना था और आतंकवाद एवं अलगाववादी गतिविधियों का मुकाबला करना था। (लुकिन, 2021)

2001 में इस संगठन को औपचारिक रूप दिया गया और इसका नाम शंघाई सहयोग संगठन रखा गया। इसी वर्ष उज़्बेकिस्तान को सदस्य के रूप में शामिल किया गया। संगठन के उद्देश्यों को भी बढ़ाया गया। अब यह केवल सुरक्षा सहयोग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और ऊर्जा सहयोग भी इसका हिस्सा बन गया। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024)

2017 भारत और पाकिस्तान की सदस्यता के लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष था। इन दोनों देशों को पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल करने से शंघाई सहयोग संगठन की भू–राजनीतिक महत्ता में भारी वृद्धि हुई। भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और पाकिस्तान दक्षिण एशिया में एक प्रमुख खिलाड़ी है। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) इसके बाद ईरान को भी सदस्य के लिए आमंत्रित किया गया। शंघाई सहयोग संगठन की संस्थागत संरचना काफी स्पष्ट और व्यवस्थित है। इसमें राज्य के प्रमुखों की परिषद् सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है। प्रधानमंत्रियों की परिषद् और विदेश मंत्रियों की परिषद् भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शंघाई में स्थित स्थायी सचिवालय संगठन की प्रशासनिक व्यवस्था देखता है। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024) सभी महत्वपूर्ण निर्णय सर्वसम्मति से लिए जाते हैं, जिसका मतलब है कि कोई भी सदस्य किसी निर्णय को वीटो कर सकता है।

सुरक्षा सहयोग अभी भी संगठन का मूल आधार है। सदस्य देश आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद से लड़ने के लिए एक–दूसरे के साथ काम करते हैं। संयुक्त सैन्य अभ्यास, सूचना साझाकरण और पुलिस सहयोग इसके महत्वपूर्ण तंत्र हैं। (अल्लिसन, 2019) लेकिन संगठन का दायरा अब सुरक्षा तक सीमित नहीं है।

चीन और रूस की भूमिका– शंघाई सहयोग संगठन में चीन की भूमिका केंद्रीय है। चीन न केवल इस संगठन का संस्थापक है, बल्कि यह इसकी गतिविधियों को अपनी रणनीतिक दृष्टि के अनुरूप परिचालित करता है। चीन की "एक पेटी एक सड़क" पहल

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

को शंघाई सहयोग संगठन के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है। (युक, 2024) चीन के लिए शंघाई सहयोग संगठन एशिया में अपने प्रभाव को बढ़ाने और पश्चिमी प्रभाव को कम करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। चीन की आर्थिक शक्ति संगठन को भी प्रभावित करती है। चीन सदस्य देशों में निवेश कर रहा है, बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ चला रहा है और व्यापार बढ़ा रहा है। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) यह चीन को संगठन में एक अग्रणी भूमिका देता है। लेकिन चीन की आक्रामक नीतियाँ, विशेषकर दक्षिण चीन सागर में, संगठन के भीतर तनाव भी पैदा करती हैं।

रूस शंघाई सहयोग संगठन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। रूस इस संगठन को पश्चिमी प्रभुत्व के विरुद्ध एक संतुलन का काम मानता है। यूक्रेन पर रूस के सैन्य हमले के बाद शंघाई सहयोग संगठन रूस के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। (लीन, 2025) पश्चिमी प्रतिबंधों का सामना करते हुए रूस को एशियाई देशों से सहयोग की अधिक आवश्यकता है। शंघाई सहयोग संगठन रूस को यह मंच प्रदान करता है। चीन और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी शंघाई सहयोग संगठन को शक्तिशाली बनाती है, लेकिन दोनों के बीच हमेशा पूर्ण सहमति नहीं होती। (तासोपोलोस, 2026) चीन की आर्थिक शक्ति रूस से अधिक है, जबकि रूस की सैन्य शक्ति चीन के समान है। दोनों मध्य एशिया में अपने प्रभाव को लेकर सतर्क हैं। लेकिन अमेरिका के विरुद्ध उनके साझा हितों ने उन्हें एक–दूसरे के करीब ला दिया है। (लांतेनग्ने, 2018)

भारत और शंघाई सहयोग संगठन– भारत की शंघाई सहयोग संगठन में सदस्यता 2017 में पूरी हुई, लेकिन भारत इससे बहुत पहले से इस संगठन की गतिविधियों में हिस्सा ले रहा था। भारत इस संगठन को एशिया में अपनी सुरक्षा और आर्थिक हित के लिए महत्वपूर्ण मानता है। भारत के लिए शंघाई सहयोग संगठन एक बहु–स्तरीय संगठन है। एक ओर यह भारत को चीन के साथ रणनीतिक संतुलन बनाए रखने में मदद करता है, दूसरी ओर रूस के साथ अपनी ऐतिहासिक साझेदारी को मजबूत करता है। भारत की भूमिका संगठन में अपेक्षाकृत संतुलित है। भारत आतंकवाद से मुकाबले में सक्रिय है, लेकिन चीन के साथ सीमा विवाद भी है। (कुहर्ट, 2019) भारत शंघाई सहयोग संगठन को पूरी तरह चीन–केंद्रित होने से बचाना चाहता है। भारत इस संगठन में एक वास्तविक बहुध्रुवीय तत्व जोड़ता है। भारत–पाकिस्तान संबंधों की जटिलता भी संगठन को प्रभावित करती है, लेकिन संगठन की व्यवस्था ऐसी है कि दोनों को एक–दूसरे के साथ काम करना पड़ता है।

भारत की आर्थिक वृद्धि और बढ़ती सैन्य क्षमता संगठन में भारत को अधिक महत्वपूर्ण बना रही है। (कोल्डुनोवा और दास कुंडु, 2015) भारत रूस के साथ ऊर्जा सहयोग बढ़ा सकता है। मध्य एशिया के देशों के साथ भारत के व्यापार में भी वृद्धि की संभावना है। भारत अपनी सांस्कृतिक नरम शक्ति का उपयोग करते हुए संगठन में एक सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। लेकिन भारत को चीन की प्रभुत्वशाली भूमिका से भी सावधान रहना पड़ता है।

शंघाई सहयोग संगठन की सामरिक एवं भू–राजनीतिक भूमिका– यूरेशिया का भू–राजनीतिक महत्व विश्व राजनीति में सर्वोच्च है। शंघाई सहयोग संगठन यूरेशिया के विशाल क्षेत्र को कवर करता है। (ट्रोइत्स्की, 2015) इसमें रूस, मध्य एशिया, चीन और दक्षिण एशिया शामिल हैं। इस भू–राजनीतिक महत्व को समझना बहुत जरूरी है। क्षेत्रीय सुरक्षा शंघाई सहयोग संगठन की एक मूल जिम्मेदारी है। आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद से लड़ने के लिए संगठन कई तंत्र विकसित किए हैं। (ज़ेंगिन और तोप्साकल, 2020) सीमा–पार सुरक्षा चुनौतियाँ भी संगठन का ध्यान आकर्षित करती हैं। मध्य एशिया में आतंकवादी गतिविधियाँ संगठन के लिए एक बड़ी चिंता हैं। (मेयर, 2021)

सीमा विवाद भी संगठन की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं। भारत–चीन सीमा पर तनाव संगठन के भीतर एक संवेदनशील मुद्दा है। मध्य एशिया में क्षेत्रीय सीमा विवाद भी हैं। (मेयर, 2021) लेकिन संगठन इन विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने पर बल देता है। ऊर्जा सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। मध्य एशिया के देशों के पास तेल और गैस की विशाल भंडारी है। (सन और एलमहली, 2019) शंघाई सहयोग संगठन इन संसाधनों के विकास और परिवहन पर काम कर रहा है। परिवहन संपर्क और कनेक्टिविटी परियोजनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। (अल्लिसन, 2019) मध्य एशिया का भू–राजनीतिक महत्व विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र एशिया को यूरोप से जोड़ता है। यहाँ की भू–राजनीतिक स्थिति विश्व के भविष्य को प्रभावित करेगी। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024) शंघाई सहयोग संगठन मध्य एशिया को अधिक महत्वपूर्ण भूमिका दे रहा है।

शंघाई सहयोग संगठन की आर्थिक और संस्थागत भूमिका– आर्थिक सहयोग संगठन की एक तेजी से विकसित होने वाली दिशा है। सदस्य देशों के बीच व्यापार में वृद्धि हो रही है। (सन और एलमहली, 2019) कई आर्थिक परियोजनाएँ संगठन के माध्यम से संचालित की जा रही हैं। लेकिन पारस्परिक व्यापार अभी भी इस क्षेत्र की संभावनाओं से कम है। व्यापार सुविधा बढ़ाने के लिए विभिन्न समझौते किए गए हैं। (लीन, 2025) सदस्य देशों के बीच आर्थिक असमानता भी एक चुनौती है। विकसित देश (रूस, चीन) और विकासशील देश (भारत, मध्य एशिया) के बीच आर्थिक अंतर को पूरा करना एक लक्ष्य है। ऊर्जा सहयोग विशेषकर महत्वपूर्ण है। (सन और एलमहली, 2019) रूस और मध्य एशिया की ऊर्जा संपदा को चीन और भारत तक पहुँचाना एक प्रमुख उद्देश्य है।

संपर्क और कनेक्टिविटी परियोजनाएँ भी संगठन का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। (लुकिन, 2021) सड़कें, रेलवे और पाइपलाइनें मध्य एशिया से होकर चीन और भारत को जोड़ना महत्वपूर्ण है। विकास संबंधी पहलें भी संगठन का हिस्सा हैं। सदस्य देशों की सामाजिक और आर्थिक विकास में मदद के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। संस्थागत विस्तार भी संगठन को मजबूत कर रहा है। अवलोकक देशों और संवाद भागीदारों की संख्या बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ संबंध भी विकसित हो रहे हैं। (संयुक्त राष्ट्र महासभा, 2023) शंघाई सहयोग संगठन एक वैश्विक मंच के रूप में उभर रहा है।

शंघाई सहयोग संगठन की सीमाएँ और आंतरिक चुनौतियाँ– शंघाई सहयोग संगठन की सफलता पर विचार करते समय इसकी कमजोरियों को भी समझना जरूरी है। (स्केपानोविच, 2021) सदस्य देशों के पास अलग–अलग राष्ट्रीय हित हैं। ये हित कभी–कभी एक–दूसरे के विरोध में होते हैं। उदाहरण के लिए, भारत और पाकिस्तान कश्मीर के मुद्दे पर सहमत नहीं हो सकते। (कुहर्ट, 2019) भारत और चीन सीमा पर तनाव रखते हैं। ये असहमतियाँ संगठन की निर्णय प्रक्रिया को धीमा कर देती हैं। सर्वसम्मति की नीति संगठन की एक विशेषता है, लेकिन यह कभी–कभी इसकी एक कमजोरी भी साबित होती है। (अल्लिसन, 2019) कोई भी सदस्य किसी निर्णय को रोक सकता है, जिससे संगठन की कार्यकुशलता प्रभावित होती है। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) आर्थिक असमानता भी एक मुद्दा है। चीन की अर्थव्यवस्था अन्य सदस्य देशों से कहीं अधिक बड़ी है। यह असमानता संगठन के भीतर शक्ति के विभाजन को प्रभावित करती है।

सुरक्षा और आर्थिक एजेंडे के बीच संतुलन भी एक चुनौती है। (ट्रोइत्स्की, 2015) कुछ देश सुरक्षा को अधिक महत्व देते हैं, जबकि अन्य आर्थिक सहयोग पर ज्यादा ध्यान देना चाहते हैं। प्रभावशाली सदस्य देशों की विदेश नीति की प्राथमिकताएँ भी भिन्न हैं। चीन को एशिया में अपना प्रभुत्व बढ़ाने में रुचि है। रूस यूरोपीय मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है। भारत एशिया और वैश्विक मंच दोनों पर प्रभाव रखना चाहता है। (लांतेनग्ने, 2018)

संगठन में पारदर्शिता की भी कमी है। निर्णय प्रक्रिया अक्सर आम जनता की दृष्टि से छिपी रहती है। सदस्य देशों के बीच कई समझौते गोपनीय होते हैं। (स्केपानोविच, 2021) संगठन की संचार व्यवस्था भी कमजोर है। बाहरी दुनिया को संगठन के बारे में पूरी जानकारी नहीं मिलती। ये सभी कारक संगठन की कार्यकुशलता को प्रभावित करते हैं।

वैश्विक शक्ति संतुलन में शंघाई सहयोग संगठन की उभरती भूमिका– यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या शंघाई सहयोग संगठन बदलती वैश्विक शक्ति संरचना का प्रतिबिंब है या क्या यह इस प्रक्रिया को सक्रिय रूप से आकार दे रहा है। सबूत बताते हैं कि यह दोनों ही है। शंघाई सहयोग संगठन बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का एक संस्थागत प्रतीक है। यह उस विश्व में उभर रहा है जहाँ कोई एक शक्ति सर्वोच्च नहीं है। लेकिन यह संगठन बहुध्रुवीयता को एक संस्थागत रूप देता है। (लीन, 2025) यह संगठन चीन, रूस और भारत जैसी प्रमुख शक्तियों को एक मंच पर लाता है। इन देशों की एक–दूसरे के साथ सहयोग की व्यवस्था से यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक व्यवस्था में वास्तविक परिवर्तन हो रहा है। शंघाई सहयोग संगठन को केवल चीन की रणनीति के संदर्भ में देखना अधूरा है। (तासोपोलोस, 2026)

संगठन की सदस्यता का विस्तार भी महत्वपूर्ण है। (पोर्शनेवा और रजिनकोव, 2024) भारत और पाकिस्तान की सदस्यता ने इसे एशिया का सबसे व्यापक संगठन बना दिया। अब संगठन यूरोप (रूस के यूरोपीय भाग) से लेकर दक्षिण एशिया तक फैला हुआ है। यह विस्तार संगठन की वैश्विक प्रासंगिकता को दर्शाता है। (लुकिन, 2021) लेकिन संगठन को कई बाहरी दबावों का भी सामना करना पड़ता है। अमेरिका शंघाई सहयोग संगठन को एक विरोधी गठजोड़ के रूप में देखता है। (स्केपानोविच, 2021) लेकिन इन दबावों के बावजूद शंघाई सहयोग संगठन मजबूत हो रहा है। संगठन अपनी कार्यप्रणाली को सुधार रहा है। नई परियोजनाएँ शुरू की जा रही हैं। शंघाई सहयोग संगठन बदलती विश्व व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह संगठन यह दर्शाता है कि अमेरिका–केंद्रित विश्व व्यवस्था की जगह एक नई, अधिक समावेशी व्यवस्था आ रही है। शंघाई सहयोग संगठन इस नई व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण संस्थागत आधार है।

5. समन्वित विश्लेषणात्मक चर्चा– वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन की एक स्पष्ट श्रृंखला दिखाई देती है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद एकध्रुवीय व्यवस्था थी। लेकिन 2008 के वित्तीय संकट के बाद यह व्यवस्था कमजोर पड़ने लगी। चीन, भारत और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के उदय के साथ बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का जन्म हुआ। इस बहुध्रुवीय विश्व में नई संस्थाएँ और गठजोड़ बनने लगे। शंघाई सहयोग संगठन इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। शंघाई सहयोग संगठन केवल चीन की रणनीति नहीं है। यह एक बहुआयामी संगठन है जिसमें कई शक्तियाँ अपने हित को आगे बढ़ा रहे हैं। (उनलदीलर कोचमाज़, 2019) भारत, रूस और अन्य सदस्य देश भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। संगठन की संरचना ऐसी है कि कोई एक शक्ति पूर्णतः प्रभावशाली नहीं बन सकती। सर्वसम्मति की नीति सभी सदस्यों को महत्व देती है। शंघाई सहयोग संगठन बहुध्रुवीयता को एक संस्थागत रूप देता है। यह केवल सुरक्षा संगठन नहीं है, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सहयोग का एक व्यापक मंच है। (लीन, डोंगचेन, और कोलोतोवा, 2020) संगठन की बढ़ती सदस्यता और बढ़ती गतिविधियाँ इसके महत्व को प्रदर्शित करती हैं।

6. निष्कर्ष– विश्व की राजनीतिक व्यवस्था में गहरे परिवर्तन हो रहे हैं। एकध्रुवीय व्यवस्था की जगह बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था आ रही है। यह परिवर्तन आर्थिक, सैन्य, तकनीकी और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। चीन का उदय, भारत की बढ़ती भूमिका, रूस की पुनरसक्रियता और वैश्विक दक्षिण की सक्रिय भागीदारी इस परिवर्तन के प्रमुख संकेत हैं। शंघाई सहयोग संगठन इन परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण संस्थागत प्रतीक है। यह संगठन दिखाता है कि विश्व की शक्ति संरचना कैसे बदल रही है। इसकी संरचना, गतिविधियाँ और सदस्यता का विस्तार सभी यह दर्शाते हैं कि एक नई विश्व व्यवस्था का निर्माण हो रहा है। यह नई व्यवस्था अधिक समावेशी, विकेंद्रीकृत और बहुध्रुवीय है। शंघाई सहयोग संगठन अपनी सीमाओं और आंतरिक चुनौतियों के बावजूद इस नई व्यवस्था का प्रतीक बनकर उभरा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अल्लिसन, आर. (2019). शंघाई सहयोग संगठनः यूरेशियाई व्यवस्था के लिए एक खंडित आधार। ई. कोरोस्टेलेवा, जेड. पैकिन, और एस. पडुआनो (संपादक), माइदान के बाद पाँच सालः बृहत्तर यूरेशिया की ओर? (पृष्ठ 20–25)। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स।
2. कोल्डुनोवा, ई., और दास कुंडु, एन. (2015). शंघाई सहयोग संगठन में रूस की भूमिका और मध्य एशियाः चुनौतियाँ और संभावनाएँ। वल्दाई चर्चा क्लब।
3. कुहर्ट, एन. (2019). एक विस्तारित शंघाई सहयोग संगठनः पुनः जीवंत, या अप्रासंगिकता की ओर? ई. कोरोस्टेलेवा, जेड. पैकिन, और एस. पडुआनो (संपादक), माइदान के बाद पाँच सालः बृहत्तर यूरेशिया की ओर? (पृष्ठ 26–32)। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स।
4. लांतेनग्ने, एम. (2018). रूस, चीन और शंघाई सहयोग संगठनः विचलित सुरक्षा हित और "क्रीमिया प्रभाव"। एच. ब्लाकिस्रुड और ई. विल्सन रो (संपादक), रूस की पूर्व की ओर मुड़ः घरेलू नीति निर्माण और क्षेत्रीय सहयोग (पृष्ठ 119–138)। Palgrave Macmillan.
5. लीन, एस. (2025). विस्तार बिना विकीर्णताः रूस–यूक्रेन संघर्ष के संदर्भ में शंघाई सहयोग संगठन की संस्थागत पहचान निर्माण। अंतरराष्ट्रीय राजनीति, 1–21.
6. लीन, डब्ल्यू., डोंगचेन, जेड., और कोलोतोवा, ए. (2020). शंघाई सहयोग संगठन में चीन और रूसः सहमति और विचलन। मानव मामले, 30, 189–198.
7- लीन, सी. (2024). चीन का उदय और चीन–रूस रणनीतिक साझेदारी। Palgrave Macmillan.
8. लुकिन, ए. (2021). शंघाई सहयोग संगठनः बृहत्तर यूरेशिया के लिए एक वैकल्पिक मार्ग। Routledge.

9. मेयर, एस. (2021). बाहर से सहयोगः मध्य एशिया में सुरक्षा क्षेत्रवाद और इसकी सीमाएँ। मध्य एशियाई मामले, 8, 203–228.
10. ओइडोव, के., और बतमुंख, पी. (2025). मंगोलिया और शंघाई सहयोग संगठनः स्थिति, संदर्भ और प्रवृत्तियों का एक विषयगत शोध विश्लेषण। ओरिएंटल वेक्टरः इतिहास, समाज, राज्य, 3, 43–63.
11. पटनायक, ए. (2019). मध्य एशिया में क्षेत्रवाद और क्षेत्रीय सहयोग। अंतरराष्ट्रीय अध्ययन, 56, 147–162.
12. पोर्शनेवा, ओ. एस., और रजिनकोव, एस. एल. (2024). शंघाई सहयोग संगठन की संस्थागत निर्माण और विकासः पूर्वव्यापी विश्लेषण का अनुभव। RUDN के वेस्टनिकः अंतरराष्ट्रीय संबंध, 24(2), 264–279.
13. संयुक्त राष्ट्र महासभा। (2023). प्रस्ताव 77/338ः संयुक्त राष्ट्र और शंघाई सहयोग संगठन के बीच सहयोग। संयुक्त राष्ट्र।
14. स्केपानोविच, जे. (2021). रूस और शंघाई सहयोग संगठनः प्रतिबद्धता क्षमता का एक प्रश्न। यूरोपीय राजनीति और समाज, 23(5), 712–734.
15. स्टेयर्स, पी. बी., जिआ, क्यू., तोच्ची, एन., जैसानकर, डी., और कोर्टूनोव, ए. (2020). बदलती विश्व व्यवस्था पर दृष्टिकोण। विदेश संबंधों की परिषद्।
16. सन, डी., और एलमहली, एच. (2019). नाटो बनाम शंघाई सहयोग संगठनः मध्य एशिया और खाड़ी में बाहरी शक्तियों की सैन्य मौजूदगी का तुलनात्मक अध्ययन। एशियाई मध्यपूर्वी और इस्लामिक अध्ययन पत्रिका, 12(4), 438–456.
17. तासोपोलोस, आई. (2026). रूस की वैश्विक और क्षेत्रीय गठजोड़ की नाजुक संतुलनः शंघाई सहयोग संगठन का निर्माण और विकास। द रेस्टः राजनीति और विकास पत्रिका, 16(1), 107–121.
18. ट्रोइत्स्की, ई. (2015). मध्य एशिया क्षेत्रीय सुरक्षा परिसरः रूसी और अमेरिकी नीतियों का प्रभाव। वैश्विक समाज, 29, 1–22.
19. उनलदीलर कोचमाज़, एस. (2019). विश्व राजनीति में नई शक्तियों का उदयः रूस, चीन और शंघाई सहयोग संगठन। Uluslararası Iliskiler, 16(61), 127–141.
20. ज़ेंगिन, ए. के., और तोप्साकल, आई. (2020). मध्य एशिया क्षेत्रीय सुरक्षा परिसर में गॉर्डियन गाँठः एक बहु–वेक्टर विश्लेषण। यूरेशियन अनुसंधान पत्रिका, 2(2), 19–36.
21. युक, एल. (2024). चीन का उदय और चीन–रूस रणनीतिक साझेदारी।पल्ग्रावे मैकमिलन .

*****